भारतीय पारंपरिक ज्ञान पत्रिका
खंड 25(7), जुलाई 2026, पृ. 653-664
DOI: 10.56042/ijtk.v25i7.25865

हिमाचल प्रदेश के जिला किन्नौर की भाबा घाटी के स्वदेशी समुदायों में पवित्र पौधों का सांस्कृतिक एवं नृवंश-वनस्पति संबंधी महत्त्व

गायत्री डेरयान*, धीरज एस रावत एवं शीतल
जैवविज्ञान विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला 171 005, हिमाचल प्रदेश, भारत
*ई-मेल: gayatrideryan@gmail.com

प्राप्त 19 जनवरी 2026; संशोधित 11 अप्रैल 2026; स्वीकृत 07 जुलाई 2026

विश्वभर के ग्रामीण समाजों में पौधों का सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्व है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जनपद की भाबा घाटी में निवास करने वाले स्वदेशी समुदायों द्वारा पवित्र पौधों के सांस्कृतिक महत्वत था उनके नृवंश-वनस्पति (एथ्नोबॉटैनिकल) उपयोगों का दस्तावेजीकरण एवं मूल्यांकन करना था। नृवंश-वनस्पति संबंधी जानकारी अर्ध-संरचित प्रश्नावली तथा मुक्त-समाप्ति साक्षात्कारों के माध्यम से 30 स्थानीय सूचनादाताओं से एकत्रित की गई, जिनमें अधिकांश औपचारिक शिक्षा से वंचित वृद्धजन थे। अध्ययन क्षेत्र से 17 कुलों से संबंधित कुल 27 पादप प्रजातियों का अभिलेखन किया गया। इनमें रोजेसी (5 प्रजातियाँ) सर्वाधिक प्रमुख कुल रहा, इसके पश्चात पो ए सी (3 प्रजातियाँ), जबकि पिनेसी, पॉलीगोनेसी, एपिएसीतथाएस्टरेसी में प्रत्येक से 2 प्रजातियाँ दर्ज की गईं। पादपजीवन-रूपों में शाकीय प्रजातियाँ सर्वाधिक (14) थीं, जिनके बाद वृक्ष (7), झाड़ियाँ (5) तथा आरोही पौधा (1) का स्थान रहा। उपयोग किए जाने वाले पादप भागों में बीजों का सर्वाधिक उपयोग (37.03%) दर्ज किया गया, इसके बाद पुष्प (25.93%), पत्तियाँ (18.52%) तथा फल (14.81%) का स्थान रहा। सांस्कृतिक महत्व सूचकांक (Cultural Importance Index; CI) के आधार पर *Amaranthus caudatus* L., *Juglans regia* L. तथा *Saussurea obvallata* (DC.) Sch.Bip. सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रजातियाँ रहीं, जिनका CI मान 1.46 दर्ज किया गया। यह अध्ययन भाबा घाटी में परंपरागतरूप से महत्वपूर्ण पवित्र पादपप्रजातियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को रेखांकित करता है तथा भावी पीढ़ियों के लिए इन पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों एवं सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण हेतु उनके व्यापक प्रलेखन और संरक्षण की आवश्यकता पर बल देता है.

मुख्य शब्द: संरक्षण, नृवंश-वनस्पति विज्ञान, स्वदेशी समुदाय, पवित्र पौधे